Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
March 2024 5(3),2044–2049

CURRENT RELEVANCE OF PANDIT MADAN MOHAN MALAVIYA'S EDUCATIONAL PHILOSOPHY

पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता

Preeti Singh [1], Sunita Baldodiya [2]

[1] Associate Professor, Department of Education, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India
[2] Research Scholar, Department of Education, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India

Corresponding Author

Sunita Baldodiya,
sunitabaldodiya881@gmail.com

DOI

10.29121/shodhkosh.v5.i3.2024.6151

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: Madan Mohan Malaviya was an Indian educationist and political leader who contributed significantly to the development of education in India during the colonial period. The present research explores Madan Mohan Malaviya's educational philosophy and its relevance to contemporary education in India. The present research begins by examining Malaviya's views on education as a means of promoting social and national progress. It then analyses his vision for an education system that combines the best of Indian and Western traditions. Malaviya's emphasis on character building, moral education and the cultivation of social responsibility is also discussed. The present research explores Malaviya's views on teacher training and the role of the teacher in society. Malaviya believed that teachers have an important role to play in shaping the character and values of their students, and that teacher education should be based on a combination of theory and practice. Finally, the present research considers the relevance of Malaviya's educational philosophy. Although Malaviya's ideas developed in a very different historical context, many of the principles he propounded, such as the importance of character building and the role of teachers as moral guides, remain relevant even today.

Hindi: मदन मोहन मालवीय एक भारतीय शिक्षाविद् और राजनीतिक नेता थे, जिन्होंने औपनिवेशिक काल के दौरान भारत में शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रस्तुत शोध मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक दर्शन और भारत में समकालीन शिक्षा के लिए इसकी प्रासंगिकता की खोज करता है। प्रस्तुत शोध सामाजिक और राष्ट्रीय प्रगति को बढ़ावा देने के साधन के रूप में शिक्षा पर मालवीय के विचारों की जांच करके शुरू होता है। फिर यह एक ऐसी शिक्षा प्रणाली के लिए उनके दृष्टिकोण का विश्लेषण करता है जिसमें भारतीय और पश्चिमी परंपराओं का सबसे अच्छा संयोजन हो। चरित्र निर्माण, नैतिक शिक्षा और सामाजिक जिम्मेदारी की खेती पर मालवीय के जोर पर भी चर्चा की गई है। प्रस्तुत शोध शिक्षक प्रशिक्षण और समाज में शिक्षक की भूमिका पर मालवीय के विचारों का पता लगाता है। मालवीय का मानना था कि शिक्षकों को अपने छात्रों के चरित्र और मूल्यों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होती है, और शिक्षक शिक्षा सिद्धांत और व्यवहार के संयोजन पर आधारित होनी चाहिए। अंत में, प्रस्तुत शोध मालवीय जी के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता पर विचार करता है। यद्यपि मालवीय जी के विचार बहुत भिन्न ऐतिहासिक संदर्भ में विकसित हुए थे, फिर भी उनके द्वारा प्रतिपादित अनेक सिद्धांत, जैसे चरित्र निर्माण का महत्व और नैतिक मार्गदर्शक के रूप में शिक्षकों की भूमिका, आज भी प्रासंगिक हैं।

Keywords: Madan Mohan Malaviya, Educational Philosophy, Teacher, Contemporary, मदन मोहन मालवीय, शैक्षिक दर्शन, शिक्षक, समकालीन

How to cite this article (APA): Singh, P. and Baldodiya, S. (2024). Current Relevance of Pandit Madan Mohan Malaviya's Educational Philosophy. *ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts, 5*(3), 2044–2049. doi: 10.29121/shodhkosh.v5.i3.2024.6151

1. प्रस्तावना

मदन मोहन मालवीय एक प्रमुख भारतीय शिक्षाविद् और समाज सुधारक थे, जो 1861 से 1946 तक जीवित रहे। उनका मानना था कि शिक्षा सामाजिक और आर्थिक प्रगति की कुंजी है, और यह जाति, लिंग या सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए। मालवीय ने खुद को एक राष्ट्रीय आंदोलन के नेता, एक महान देशभक्त के रूप में स्थापित किया था, जो सनातन धर्म और हिंदू सद्भाव के लिए भी समर्पित थे (झा, 2022) ।

मालवीय पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली के प्रबल समर्थक थे, जिसके बारे में उनका मानना था कि नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देने में इसका बहुत महत्व है। धर्म के अंतर्निहित दर्शन का उद्देश्य देश में शांति, सद्भाव और खुशी पैदा करना है, साथ ही साथ पारलौकिक मानवीय विषयों के बारे में सोचना है (चंद्र, 2000)। उनका यह भी मानना था कि शिक्षा राष्ट्रीय पहचान और गौरव की भावना पर आधारित होनी चाहिए और इसे एक मजबूत और आत्मनिर्भर भारत के विकास की दिशा में निर्देशित किया जाना चाहिए। मालवीय ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जिसकी स्थापना उन्होंने 1916 में पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणालियों के पुनरुद्धार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की थी, साथ ही आधुनिक शिक्षा को भी अपनाया था। बीएचयू को एक ऐसी जगह के रूप में डिजाइन किया गया था जहाँ सभी पृष्ठभूमि के छात्र एक साथ आकर सीख सकें, विचारों का आदान-प्रदान कर सकें और राष्ट्रीय पहचान की मजबूत भावना विकसित कर सकें।

मदन मोहन मालवीय महिला शिक्षा के भी प्रबल समर्थक थे और उनका मानना था कि शिक्षा ही महिला सशक्तिकरण और मुक्ति की कुंजी है। उनका मानना था कि महिलाओं को पुरुषों के समान ही शिक्षा के अवसर मिलने चाहिए और जाति और लिंग की उन बाधाओं को तोड़ने के लिए शिक्षा आवश्यक है, जिन्होंने सदियों से भारतीय समाज को पीछे रखा हुआ है। कुल मिलाकर, मालवीय जी का शैक्षिक दर्शन राष्ट्रीय गौरव, सामाजिक न्याय और समावेशिता की गहरी भावना में निहित था। उनका मानना था कि शिक्षा सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए और इसे एक मजबूत और आत्मनिर्भर भारत के विकास की दिशा में निर्देशित किया जाना चाहिए जो अतीत की सामाजिक और आर्थिक असमानताओं से मुक्त हो।

2. संबंधित साहित्य की समीक्षा

पांडे (2021) ने खुलासा किया कि मदन मोहन मालवीय का मानना है कि उच्च शिक्षा का लक्ष्य कला और विज्ञान की सभी शाखाओं में सीखने और शोध को बढ़ावा देना होना चाहिए। ऐसे वैज्ञानिक, तकनीकी और व्यावसायिक ज्ञान को आगे बढ़ाना और प्रसारित करना, जो आवश्यक व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ मिलकर स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा देने और देश के भौतिक संसाधनों के विकास में सहायता करने के लिए सबसे उपयुक्त हो, और धर्म और नैतिकता के माध्यम से युवाओं में चरित्र के विकास को बढ़ावा दे। महामना की दृष्टि इतनी दूरदर्शी थी कि उन्होंने उच्च शिक्षा के साथ-साथ छात्र की बुनियादी समस्याओं को भी पहचाना। उन्होंने अपने समय के मुद्दे को पहचाना, जिसके लिए हम आज रो रहे हैं। बेरोजगारी और उच्च गुणवत्ता वाली उच्च शिक्षा का मुद्दा अधिक दबाव वाला है।

तिवारी (2021) ने खुलासा किया कि पंडित मदन मोहन मालवीय आधुनिक भारतीय इतिहास में अधिक सम्मानित स्थान के हकदार हैं। हिंदू महासभा के संस्थापक सदस्य होने के बावजूद, वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सक्रिय सदस्य रहे और चार बार इसके अध्यक्ष रहे। मालवीय के मन में स्वतंत्र भारत का स्पष्ट दृष्टिकोण था। उनका मानना था कि अस्पृश्यता, जाति आधारित भेदभाव, लैंगिक असमानता और श्रमिक अन्याय जैसे सामाजिक भेदभाव को समाप्त किया जाना चाहिए। जब उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की, तो उन्होंने जाति या वर्ग की परवाह किए बिना सभी छात्रों के लिए समानता के महत्व पर जोर दिया।

रेड्डी (2018) ने खुलासा किया कि बार्थ रत्न पंडित मदन मोहन मालवीय 1861 से 1946 तक भारतीय राष्ट्रवाद के महापुरुष थे। उन्होंने यह भी खुलासा किया कि, यदि पैगंबर, पुजारी और राजा ऐसी ताकतें हैं जो किसी देश की प्रगति का मार्गदर्शन करती हैं, तो पंडित उनमें से एक होना चाहिए। पंडित मालवीय वास्तव में भारतीय राष्ट्रवाद के महापुरुष थे।

चांद औ र मिश्रा (2015) ने "कृषि शिक्षा और अनुसंधान पर मदन मोहन मालवीय के दृष्टिकोण" की जांच की और पाया कि उन्होंने हमेशा कृषि में आत्मनिर्भरता पर जोर दिया। बीएचयू किसान भागीदारी अनुसंधान में अग्रणी है, जो कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ सहयोग करता है।

उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने (मई, 2015) "पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण मिशन (पीएमएमएमएनएमटीटी)"नामक एक योजना शुरू की। इस मिशन का उद्देश्य शिक्षकों, शिक्षण, शिक्षक तैयारी, व्यावसायिक विकास, पाठ्यक्रम डिजाइन, मूल्यांकन और मूल्यांकन पद्धतियों को डिजाइन और विकसित करना, शिक्षणशास्त्र में अनुसंधान और संपूर्ण रूप से प्रभावी शिक्षणशास्त्र के विकास से संबंधित सभी मुद्दों को संबोधित करना है। यह सरकार की कार्रवाई के प्रमुख क्षेत्रों में से एक होगा।

सोमस्कंदन (2013) ने पाया कि भारत में उच्च शिक्षा के लिए महामना पंडित मदन मोहन मालवीयजी की भूमिका अद्वितीय और दूरदर्शी थी। पंडित मदन मोहन मालवीयजी ने ही भारत में विश्वविद्यालय शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने यह भी पाया कि मालवीय जी के लिए उच्च शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य ईश्वर और मातृभूमि के प्रति कर्तव्य की भावना को जीवित रखना, अपने साथियों की सेवा करना, जन कल्याण को बढ़ावा देना और मातृभूमि की खातिर सब कुछ त्यागने के लिए तैयार रहना था।

तिवारी (2013) ने मदन मोहन मालवीय: राजनेता, सांसद और शिक्षाविद" पर शोध किया और पाया कि पंडित मदन मोहन मालवीय ने सात दशकों से अधिक समय तक राजनीतिक संघर्ष में भूमिका निभाई है। उन्होंने सामाजिक परिवर्तन की वकालत की। उन्होंने यह भी बताया कि वे एक महान शिक्षा सुधारक थे जिन्होंने पूरे देश में शिक्षा के प्रसार की वकालत की और उच्च शिक्षा के लिए अकादमिक केंद्र के रूप में वाराणसी (हिंदुओं के लिए एक पवित्र स्थान) को चुना। उन्होंने विभिन्न कांग्रेस सत्रों में उनकी भागीदारी को स्वदेशी और स्वराज के उद्देश्यों के लिए काफी व्यापक और सहायक पाया।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1) पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन करना।
2) समकालीन शिक्षा प्रणाली पर पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।

4. शोध विधि

शोधकर्ता ने वर्तमान अध्ययन के लिए विषयवस्तु विश्लेषण पद्धति को अपनाया। शोधकर्ता ने अध्ययन के लिए डेटा के द्वितीयक स्रोतों से मदद ली है। स्रोत लेख, किताबें, समाचार पत्र आदि हैं।

5. मदन मोहन मालवीय का शैक्षिक दर्शन

मालवीय शिक्षा को व्यक्तियों को अपनी क्षमता को पूर्ण करने और समाज में योगदान देने में सक्षम बनाने के साधन के रूप में देखते थे। उनका मानना था कि शिक्षा सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए, चाहे उनकी सामाजिक या आर्थिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो। उनके विचार में, शिक्षा नैतिक और आचार-विचार के सिद्धांतों पर आधारित होनी चाहिए, और व्यक्तियों में अपने साथियों और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना पैदा करनी चाहिए। उनका मानना था कि शिक्षा व्यक्तियों को सामाजिक न्याय और समानता की भावना विकसित करने में मदद करनी चाहिए, और उन्हें समाज की बेहतरी के लिए काम करने के लिए तैयार करना चाहिए। उनका मानना था कि शिक्षा को एक छात्र में सीखने की जिज्ञासा और जुनून को प्रज्वलित करना चाहिए और उन्हें आजीवन सीखने वाला बनने के लिए सशक्त बनाना चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए, चाहे उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि या लिंग कुछ भी हो। कुल मिलाकर, मालवीय की शिक्षा की परिभाषा व्यक्तिगत और सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में और एक न्यायपूर्ण और समतापूर्ण समाज के निर्माण के लिए एक उपकरण के रूप में शिक्षा के महत्व पर जोर देती है।

5.1. शिक्षा के उद्देश्य

मदन मोहन मालवीय एक भारतीय शिक्षाविद् और राजनीतिक नेता थे, जिनका मानना था कि शिक्षा समाज के विकास और प्रगति की कुंजी है। समाज। उन्होंने शिक्षा को व्यक्तियों के चरित्र और व्यक्तित्व को आकार देने के साधन के रूप में देखा, साथ ही जिम्मेदार नागरिक बनाने के साधन के रूप में भी देखा जो समाज की बेहतरी में योगदान दे सकें। मालवीय का शैक्षिक दर्शन पारंपरिक भारतीय मूल्यों में गहराई से निहित था और छात्रों के समग्र विकास पर जोर देता था। मालवीय के दर्शन के अनुसार शिक्षा के कुछ मुख्य उद्देश्य हैं:

- चरित्र निर्माण: मालवीय का मानना था कि शिक्षा का अंतिम उद्देश्य छात्रों में मजबूत चरित्र और नैतिक मूल्यों का निर्माण करना है। उनका मानना था कि शिक्षा को न केवल ज्ञान प्रदान करना चाहिए बल्कि छात्रों को ईमानदारी, ईमानदारी और सामाजिक जिम्मेदारी का महत्व भी सिखाना चाहिए।
- समग्र विकास: मालवीय छात्रों के समग्र विकास में विश्वास करते थे, जिसमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास शामिल है। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य छात्र के व्यक्तित्व के बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक पहलुओं को विकसित करना होना चाहिए।
- व्यावहारिक ज्ञान: मालवीय का मानना था कि शिक्षा को केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर ही ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहिए बल्कि व्यावहारिक प्रशिक्षण और कौशल विकास भी प्रदान करना चाहिए। उनका मानना था कि छात्रों को ऐसे कौशल सिखाए जाने चाहिए जो उन्हें आत्मनिर्भर बनने और अर्थव्यवस्था में योगदान देने में सक्षम बनाएं।
- राष्ट्रवाद: मालवीय एक कट्टर राष्ट्रवादी थे और उनका मानना था कि शिक्षा को देशभक्ति और राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा देना चाहिए। उनका मानना था कि शिक्षा को छात्रों में देश के प्रति गर्व और प्रेम की भावना पैदा करनी चाहिए।
- सामाजिक सुधार: मालवीय का मानना था कि शिक्षा को सामाजिक सुधार का एक साधन होना चाहिए और इसका उपयोग जातिवाद, सांप्रदायिकता और भेदभाव जैसी सामाजिक बुराइयों को मिटाने के लिए किया जाना चाहिए।

कुल मिलाकर, मालवीय के शैक्षिक दर्शन ने शिक्षा के महत्व पर जोर दिया, जो जिम्मेदार और सक्षम व्यक्तियों को बनाने का एक साधन है जो समाज के विकास में योगदान दे सकते हैं।

5.2. पाठ्यक्रम

मालवीय के अनुसार, शिक्षा सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए, चाहे उनकी सामाजिक स्थिति या आर्थिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो। उनका मानना था कि शिक्षा से व्यक्तियों को समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करने और समुदाय के प्रति सेवा की भावना को बढ़ावा देने में मदद मिलनी चाहिए। इन मान्यताओं के अनुरूप, मालवीय ने पाठ्यक्रम में निम्नलिखित तत्वों को शामिल करने की वकालत की:

- नैतिक शिक्षाः मालवीय का मानना था कि शिक्षा से छात्रों में नैतिक और नैतिक मूल्य पैदा होने चाहिए। पाठ्यक्रम में ईमानदारी, निष्ठा, दूसरों के प्रति सम्मान और सामाजिक जिम्मेदारी की शिक्षा शामिल होनी चाहिए।
- व्यावहारिक शिक्षाः मालवीय ने व्यावहारिक शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया जो छात्रों को वास्तविक दुनिया में सफल होने के लिए कौशल से लैस करेगी। इसमें व्यावसायिक प्रशिक्षण, प्रशिक्षुता और इंटर्नशिप शामिल थे।
- आध्यात्मिक विकासः मालवीय का मानना था कि शिक्षा को छात्रों के आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देना चाहिए। उनका मानना था कि यह धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन, ध्यान और दूसरों की सेवा के माध्यम से हासिल किया जा सकता है।
- शारीरिक शिक्षाः मालवीय ने पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा और खेल के महत्व पर जोर दिया। उनका मानना था कि शारीरिक फिटनेस समग्र स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है और इससे अनुशासन और टीम भावना विकसित करने में मदद मिल सकती है।
- सांस्कृतिक शिक्षाः मालवीय राष्ट्रीय पहचान और गौरव की भावना को बढ़ावा देने के लिए सांस्कृतिक शिक्षा के महत्व में विश्वास करते थे। इसमें इतिहास, साहित्य और कला का अध्ययन शामिल था। कुल मिलाकर, मालवीय के शैक्षिक दर्शन ने जिम्मेदार और दयालु व्यक्तियों को बनाने में शिक्षा के महत्व पर जोर दिया जो समाज में सकारात्मक योगदान दे सकते हैं।

5.3. शिक्षण के तरीके

शिक्षण के निम्नलिखित तरीकों पर जोर दियाः

- गतिविधि-आधारित शिक्षणः मालवीय का मानना था कि शिक्षण व्यावहारिक होना चाहिए न कि केवल सैद्धांतिक। इसलिए, उन्होंने गतिविधि-आधारित शिक्षण के महत्व पर जोर दिया, जिसमें व्यावहारिक गतिविधियाँ शामिल हैं जो छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने की अनुमति देती हैं।
- सहकारी शिक्षणः मालवीय का मानना था कि छात्रों को एक-दूसरे से सीखने के लिए समूहों में काम करना चाहिए। उनका मानना था कि सहकारी शिक्षण छात्रों को महत्वपूर्ण सामाजिक और संचार कौशल विकसित करने में मदद करता है, और यह उन्हें सहयोगात्मक रूप से काम करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
- स्व-शिक्षणः मालवीय का मानना था कि छात्रों को केवल शिक्षक पर निर्भर रहने के बजाय, अपने दम पर सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्हें लगा कि इससे छात्रों को आत्मविश्वास विकसित करने और अपने स्वयं के सीखने की जिम्मेदारी लेने में मदद मिलेगी।
- वैयक्तिकरणः मालवीय का मानना था कि शिक्षण को प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जाना चाहिए। उन्हें लगा कि शिक्षकों को प्रत्येक छात्र की ताकत और कमजोरियों की पहचान करनी चाहिए और ऐसी शिक्षण रणनीतियाँ विकसित करनी चाहिए जो उनकी सीखने की शैली के अनुकूल हों।
- अनुभवात्मक अधिगमः मालवीय का मानना था कि अधिगम केवल सैद्धांतिक ज्ञान के बजाय अनुभवों पर आधारित होना चाहिए। उन्होंने छात्रों को विषय वस्तु की गहन समझ प्राप्त करने के लिए व्यावहारिक गतिविधियों, जैसे प्रयोग और फील्ड ट्रिप में शामिल होने के महत्व पर जोर दिया। कुल मिलाकर, मालवीय की शिक्षण पद्धतियाँ अधिगम को व्यावहारिक, सहयोगात्मक और व्यक्तिगत बनाने पर केंद्रित थीं, जिसमें अनुभवात्मक अधिगम पर जोर दिया गया था।

5.4. शिक्षक की भूमिका

मालवीय के अनुसार एक शिक्षक की भूमिका बहुमुखी थी और इसमें निम्नलिखित शामिल थेः

- ज्ञान प्रदान करना: एक शिक्षक की प्राथमिक भूमिका अपने छात्रों को ज्ञान और कौशल प्रदान करना है। इसमें न केवल अकादमिक ज्ञान, बल्कि व्यावहारिक कौशल और जीवन के सबक भी शामिल हैं जो छात्रों को वास्तविक दुनिया में सफल होने में मदद कर सकते हैं।
- जिज्ञासा को प्रोत्साहित करना: एक अच्छे शिक्षक को अपने छात्रों को जिज्ञासु बनने और प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे छात्रों में सीखने के प्रति प्रेम और नए विचारों को तलाशने की इच्छा विकसित करने में मदद मिल सकती है।
- मूल्यों को स्थापित करना: शिक्षकों को अपने छात्रों में ईमानदारी, निष्ठा, सम्मान और सहानुभूति जैसे मूल्यों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होती है। ये मूल्य न्यायपूर्ण और समतामूलक समाज के निर्माण के लिए आवश्यक हैं।
- मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करना: शिक्षकों को अपने छात्रों को मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करनी चाहिए, चुनौतियों से पार पाने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में उनकी मदद करनी चाहिए। इसमें छात्रों को कठिन समय का सामना करने पर भावनात्मक समर्थन और प्रोत्साहन प्रदान करना शामिल है।
- रोल मॉडल के रूप में कार्य करना: शिक्षकों को अक्सर उनके छात्र रोल मॉडल के रूप में देखते हैं। इसलिए, शिक्षकों के लिए एक अच्छा उदाहरण स्थापित करना और उन मूल्यों को अपनाना महत्वपूर्ण है जिन्हें वे अपने छात्रों में डालना चाहते हैं।

कुल मिलाकर, मालवीय के अनुसार, एक शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान प्रदान करना ही नहीं है, बल्कि अपने छात्रों को जिम्मेदार, सर्वांगीण व्यक्ति बनने के लिए प्रेरित और मार्गदर्शन करना भी है जो समाज में सकारात्मक तरीके से योगदान दे सकें।

6. समकालीन शिक्षा प्रणाली के लिए प्रासंगिकता

मदन मोहन मालवीय एक भारतीय शिक्षाविद् और भारत में शिक्षा सुधार के महान समर्थक थे।

वे समाज में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा की शक्ति में दृढ़ विश्वास रखते थे। उनके शैक्षिक दर्शन ने एक व्यापक शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता पर जोर दिया जो शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करे और उन्हें जिम्मेदार और प्रबुद्ध नागरिक बनने के लिए तैयार करे।

समकालीन शिक्षा प्रणाली पर मालवीय के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता निम्नलिखित तरीकों से देखी जा सकती है:

- समावेशी शिक्षा: मालवीय सभी को शिक्षा प्रदान करने में विश्वास करते थे, चाहे उनकी जाति, पंथ या लिंग कुछ भी हो। समावेशी शिक्षा का यह दर्शन आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि हम यह सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले।
- नैतिक और नैतिक मूल्यों पर जोर: मालवीय का मानना था कि शिक्षा को शिक्षार्थियों में नैतिक और नैतिक मूल्यों को स्थापित करना चाहिए। यह आज विशेष रूप से प्रासंगिक है, क्योंकि हम समाज के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए मूल्य आधारित शिक्षा की बढ़ती आवश्यकता देखते हैं।
- समग्र विकास पर ध्यान: मालवीय के दर्शन ने एक समग्र शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता पर जोर दिया जो शिक्षार्थियों की शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पूरा करेगी। यह दृष्टिकोण आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि हम शिक्षा में संपूर्ण व्यक्ति के विकास के महत्व को पहचानते हैं।
- शिक्षक प्रशिक्षण का महत्व: मालवीय ने अच्छी तरह से प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता पर जोर दिया जो शिक्षार्थियों को प्रेरित और मार्गदर्शन कर सकें। यह दर्शन आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि हम शिक्षकों द्वारा हमारे समाज के भविष्य को आकार देने में निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानते हैं।
- प्रौद्योगिकी का उपयोग: जबकि मालवीय एक अलग युग में रहते थे, उन्होंने शिक्षा में प्रौद्योगिकी के महत्व को पहचाना। आज, जैसा कि हम प्रौद्योगिकी में तेजी से प्रगति देखते हैं, उनका दर्शन सीखने के अनुभव को बढ़ाने के लिए शिक्षा में प्रौद्योगिकी को शामिल करने की आवश्यकता में प्रासंगिक बना हुआ है।

मालवीय जी का शैक्षिक दर्शन पारंपरिक भारतीय ज्ञान को आधुनिक शिक्षा के साथ एकीकृत करने के सिद्धांत पर आधारित था। उनका मानना था कि शिक्षा केवल अकादमिक ज्ञान प्राप्त करने के बारे में नहीं होनी चाहिए, बल्कि चरित्र निर्माण और नैतिक मूल्यों को विकसित करने के बारे में भी होनी चाहिए। मालवीय महिलाओं की शिक्षा के प्रबल समर्थक थे और उनका मानना था कि उन्हें पुरुषों के समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार होना चाहिए। उन्होंने व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास के महत्व पर भी जोर दिया, क्योंकि उनका मानना था कि इससे बेरोजगारी और गरीबी को कम करने में मदद मिलेगी।

शिक्षा के लिए मालवीय का दृष्टिकोण अकादमिक उत्कृष्टता तक सीमित नहीं था, बल्कि इसका उद्देश्य ऐसे जिम्मेदार नागरिक तैयार करना था जो समाज के विकास में योगदान दे सकें। उनका मानना था कि शिक्षा सभी के लिए सुलभ होनी चाहिए, चाहे उनकी सामाजिक या आर्थिक स्थिति कुछ भी हो। मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक दर्शन ने पारंपरिक भारतीय ज्ञान को आधुनिक शिक्षा, चरित्र निर्माण, नैतिक मूल्यों और सभी के लिए शिक्षा तक

समान पहुँच के साथ एकीकृत करने पर जोर दिया। बीएचयू की स्थापना और महिला शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा और सामाजिक समावेशिता के लिए उनकी वकालत के माध्यम से भारत में शिक्षा में उनका योगदान, शिक्षकों और छात्रों की पीढ़ियों को प्रेरित करता रहता है।

मालवीय का शैक्षिक दर्शन आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि हम एक ऐसी व्यापक शिक्षा प्रणाली बनाने का प्रयास करते हैं जो शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा कर सके और उन्हें जिम्मेदार और प्रबुद्ध नागरिक बनने के लिए तैयार कर सके।

संदर्भ

अक्कड़, बी. जे. (1948). मालवीयजी, पंडित मदन मोहन मालवीय का संक्षिप्त जीवन रेखाचित्र. वोरा.

चांद, आर., और मिश्रा, वी. के. (2015). कृषि शिक्षा और अनुसंधान पर मदन मोहन मालवीय का दृष्टिकोण। करंट साइंस, 108(6), 1029-1030.

चंद्रा, एस. (2000). महामना पंडित मदन मोहन मालवीय और हिंदू धर्म। (पीएचडी थीसिस, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, भारत).

उच्च शिक्षा विभाग,एमएचआरडी. (2015). पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक और शिक्षण मिशन (पीएमएमएमएनएमटीटी)। सरकार। भारत का। पी 6-27.

झा, बी. के. (2022). महात्मा और महामनाः मतभेदों के भीतर समझौता। भारतीय ऐतिहासिक समीक्षा, 49(1), 143-165।

पांडे, पी. एस. (2021) । भारत रत्न मदन मोहन मालवीयः एक दूरदर्शी शिक्षाविद्। टेक्नोलर्नः शैक्षणिक प्रौद्योगिकी का एक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल. 11(2), 123-128.

रेड्डी, जी. एच. (2018). भारतीय राष्ट्रवाद के उच्च पुजारी, बार्थ रत्न पंडित मदन मोहन मालवीय (1861-1946. ।क्)। संपादकीय बोर्ड, 7(3), 91.

सोमास्कंदन, एस. (2013). उच्च शिक्षा में मालवीय का योगदान। संस्कृति मंत्रालय। सरकार। भारत का.पी 15.

तिवारी, ए. के (2021). मालवीय के सामाजिक-राजनीतिक विचार और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन. भारतीय जर्नल सामाजिक अध्ययन और मानविकी, 1(7), 38-44.

तिवारी, जे. (2013). मदन मोहन मालवीयः राजनेता, सांसद और शिक्षाविद्. पीएच.डी. थीसिस. झांसीः इतिहास विभाग, बुंदलखंड विश्वविद्यालय.पी 257,262,274,297.